6. निम्नलिखित पद्यांशों का दिए गए निर्देशों के अनुसार विश्लेषण कीजिए :

(क) काहे री नलिनी तूं कुम्हलानी

तेरे ही नालि सरोवर पानी।

जल में उतपति जल में बास

जल में नलिनी तोर निवास

ना तलि तपन तपति न ऊपरि आगि

तोर हेतु कहु कासनि लागि।

(भक्त का स्वरूप)

अथवा

दसन जोति बरनी नहिं जाई। चौंधे दिस्टि देखि चमकाई।

नेक बिगसाइ नींद महँ हँसी। जानहुँ सरग सेऊँ दामिनी खसी।

बिहरत अधर दसन चमकाने। त्रिभुवन मुनि गण चौंधि भुलाने।

मंगर सूक गुरु संहि चारी। चौक दसन भय राजकुमारी।

नहिं जानौ दहुं कहँ दुरि जाई। रहे जाई ससि माहिं लुकाई।

जौ कोइ कहै कि बिध्धि पसारा, तेहि कर सुनहु सुभाउ।

बिधि गुपुत जग मार्ही, काहुं न देखा काउ॥

(वर्णन-कौशल) 6

12/12/17 (M).

This question paper contains **4+1** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **2604**

Unique Paper Code : **12051102** **HC**

Name of the Paper : **Hindi Kavita (Adikalin Evam Bhaktikalin Kavya)**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi—CBCS**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. "अमीर खुसरो की कविता लोक संस्कृति का प्रतिबिम्ब है।" विचार कीजिए।

अथवा

विद्यापति की प्रेम-भावना पर प्रकाश डालिए। 12

2. कबीर की भाषा-शैली का विवेचन कीजिए।

अथवा

" 'मधुमालती' का मुख्य विषय 'प्रेम की पीर' है।" इस कथन का विश्लेषण कीजिए। 12

3. सूरदास के काव्य-सौंदर्य का विवेचन कीजिए।

अथवा

मीराबाई की गीति-योजना पर प्रकाश डालिए। 12

4. तुलसी की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए।

अथवा

तुलसी-काव्य के कला-सौंदर्य का परिचय दीजिए। 12

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) काहे को ब्याही बिदेस रे, लखि बाबुल मोरे।

हम तो बाबुल तोरे बागों की कोयल
कुहकत घर-घर जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे खेतों की चिड़िया,
चुग्गा चुगत उड़ि जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।

अथवा

जहाँ-जहाँ पद जुग धरई। तहिं-तहिं सरोरुह झरई॥
जहाँ-जहाँ झलकत अंग। तहिं-तहिं बिजुरि-तरंग॥
कि हेरलि अपरुब गोरि। पइठलि हिअ मधि मोरि॥
जहँ-जहँ नयन बिकास। तहिं तहिं कमल-प्रकास॥
जहँ लहु हास संचार। तहिं-तहिं अमिअ-विधार॥
जहँ-जहँ कुटिल कटाख। ततहिं मदन-सर लाख॥
हेरइत से घनि घोर। अब तिन भुवन अगोर॥ 7

(ख) अति मलीन वृषभानु-कुमारी।

हरि स्रम-जल भीज्यों उर अंचल, तिहिं लालच न धुवावति सारी।
अध मुख रहति अनत नहिं चितवति, ज्यौं गथ हारे थकित जुवारी।
छूटे चिकुर बदन कुम्हिलाने, ज्यौं नलिनी हिमकर की मारी।
हरि संदेस सुनि सहज मृतक भइ, इक विरहिनी, दूजे अलि जारी।
सूरदास कैसें करि जीवैं, ब्रज बनिता बिन स्याम दुखारी।

अथवा

आली री म्हारे णेणाँ बाण पड़ी।
चित चढ़ी म्हारे माधुरी मूरत, हिवड़ा अणी गड़ी।
कब री ठाड़ी पंथ निहारौं, अपने भवण खड़ी।
अटक्याँ प्राण साँवरो प्यारो, जीवण मूर जड़ी।
मीरा गिरधर हाथ बिकाणी, लोग कह्याँ बिगड़ी। 8